



मैथिली की पुरस्कृत कृति

पसिझैत पाथर

रामदेव झा (जन्म 1935)

Award in Maithili to

Pasijhaita Pathar

by Ramdeo Jha (b. 1935)

born in
ed in
college,
employed
ounts,
nt in
apart
ni, she
and is

was in
lished
and
on of
nvalia,
ed the
ademi
hasha
I have
nglish,
Sapan
s prize
ection
in the
ildren,

on of 16
re the
rdinary
es are
to-day
ed with
ail that
ificant
For its
ve and
y of the
sionate
habited
le, this
anding
ture in

anagar
nagar

श्री रामदेव झा का जन्म दरभंगा के सहोरा नामक स्थान (जिला दरभंगा) में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा लहेरिया सराय और दरभंगा में हुई। आपने पटना विश्वविद्यालय से मैथिली में स्नातकोत्तर और पी-एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त कीं। इस समय आप ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में मैथिली के प्रोफेसर हैं। आप अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद के संयुक्त सचिव (1957-1959) रहे हैं और इस समय संकल्प लोक, लहेरिया सराय, के उपाध्यक्ष हैं।

आप कवीश्वर चन्दा झा और हरिमोहन झा जैसे लेखकों से प्रभावित रहे हैं। किशोरावस्था में ही आपकी कहानियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं और प्रथम संग्रह *एक खीरा : तीन फाँक* (1965) से आपको मान्यता मिली। अब तक आपकी बीस अन्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें चार समालोचनात्मक ग्रन्थ, दो कहानी-संग्रह (*मनुक संतान* और *धरती माता*), एक लम्बी बाल कहानी (*इजोती रानी*) और अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित नाटक संग्रह *पसिझैत पाथर* सम्मिलित हैं।

पसिझैत पाथर सात नाटकों का संकलन है जिनमें छह एकांकी हैं। विविध ऐतिहासिक, पौराणिक, या समकालीन सामाजिक विषयों पर आधारित इन नाटकों में लेखक का उद्देश्य प्रायः शिक्षात्मक है। इस विधा का उपयोग लेखक ने सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए किया है। नाटककार के भाव-प्रयोजन और तकनीक आधुनिक हैं और भाषा सहज, सीधी और सम्प्रेषणीय। व्यापक विषयवस्तु के कुशल निर्वाह, समाज सुधार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, और अभिव्यक्ति की निपुणता के लिए यह कृति मैथिली में लिखित भारतीय साहित्य को विशिष्ट योगदान मानी गयी है।

सम्पर्क : काबिलपुर, लहेरिया सराय,
दरभंगा 846 001 बिहार

Sri Ramdeo Jha was born in Sahora (Darbhanga District) and had his early education in Laheria Sarai, and Dharbhanga. He took his M.A. and Ph. D degrees in Maithili from Patna University, and is currently Professor of Maithili in L.N. Mithila University, Dharbhanga. He was Joint Secretary (1957-1959) of the All India Maithili Sahitya Parishad, and is Vice-President of Samkalp-Loka, Laheria Sarai.

Influenced by such writers as Kavishwar Chanda Jha, and Harimohan Jha, he began to publish short stories in magazines when he was still in his teens, and his first collection, *Eka Kheera : Teen Phanka* (1965) brought him instant recognition. He has since published twenty other works which include four critical works, two collections of short stories (*Manuka Santan* and *Dharte Mata*), a long story for children (*Ijotee Rani*), and the Sahitya Akademi Award winning collection of plays, *Pasijhaita Pathar*.

Pasijhaita Pathar is a collection of seven plays, six of them in one-act. Based variously on history, mythology or contemporary social themes, the author's purpose is often didactic, as he uses his medium to battle with social evils. The playwright's temper and technique are modern, and the language is spontaneous, direct and richly communicative. For its deft handling of a wide range of themes, its commitment to social reform, and its fine facility of expression, this work is regarded as an outstanding contribution to Indian literature in Maithili.

Address : Kabilpur, Laheria Sarai,
Darbhanga 846 001 Bihar.

IIII